Vol. 8, Issue: 3, March: 2019
ISSN: (P) 2347-5412 ISSN: (O) 2320-091X

एक दृष्टि : मार्कण्डेय के कहानी साहित्य में अंधविश्वास

डॉ. स्नेहलता शर्मा
आर. के. टी. कॉलेज, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई

सारांश

मार्कण्डेय नयी कहानी आंदोलन के एक अग्रणी कथाकार है । मार्कण्डेय का रचनाकार व्यक्तित्व बहुमुखी है। उन्होंने कहानी , उपन्यास , एकांकी, कविता, आलोचना जैसी अलग-अलग विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है तथापि वे एक कहानीकार के रूप में ज्यादा प्रसिद्ध हुए । मार्कण्डेय का जन्म 2 मई सन् 1930 में उत्तरप्रदेश के जौनपुर जिले के बराई नामक गाँव में एक सामान्य किसान परिवार में हुआ था । उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव मे ही सम्पन्न हुई । प्रतापगढ़ से इण्टरमीडिएट करने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी ० ए ० और एम ० ए ० की शिक्षा प्राप्त की। मार्कण्डेय ने 1948 ई ० में कहानी लिखना आरम्भ कर दिया था । मार्कण्डेय ने सात कहानी- संग्रह , दो उपन्यास , एक एकाकी संग्रह, एक काव्य संग्रह और एक आलोचना पुस्तक हिन्दी साहित्य को प्रदान की है । मार्कण्डेय ने अपनी कहानिये मे पात्रों के चरित्र द्वारा समाज में फैले अंधविश्वास, आशिक्षा, जातिगत भेदभाव, रूढ़िवादिता, इत्यादि सामाजिक समस्याओं का पर्दाफाश किया है।

मुख्य शब्द: अंधविश्वास, आशिक्षा, रूढ़िवादिता, ग्रामीण, समस्या, दृष्टि

१. प्रस्तावना

मार्कण्डेय मूलत : एक कहानीकार है । वे मार्क्सवादी विचारधारा के पक्षधर है । मार्क्सवादी विचारधारा के अन्तर्गत साहित्य और सामाजिक विचारधारा के बीच अत्यंत घनिष्ट संबंधो को स्वीकार किया जाता है । मार्कण्डेय की दृष्टि में सच्चा साहित्य वही है , जो सामाजिक जीवन से जुड़ा हुआ होता है । उनके अनुसार , " मेरे लिए सच्ची रचना वहीं कही छिपी है , जहाँ जीवन बदल रहा है । साहित्य को कोरे मनोरंजन की वस्तु मानना उन्हें स्वीकार्य नहीं है । मार्कण्डेय का रचनाकार उनके जीवन संघर्षों के बीच से उत्पन्न हुआ है । उनका प्रथम कहानी संग्रह " पान फूल " मुख्यत : ग्रामीण जीवन और उसकी समस्याओं पर आधारित है ।

लेखक ने कहानियों के माध्यम से समाज में फैले अंधविश्वासों , रूढ़ियों रीतियों, आडम्बरो, छुआछूत, मिथ्या धारणाओं आदि के प्रति भी अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है । लेखक की दृष्टि में इन समस्याओं का मूल कारण समाज में फैली आशिक्षा है।

लेखक इन विकृतियों को स्वस्थ समाज के निर्माण में बहुत बड़ी बाधा मानते हैं । जब तक -इनका निराकरण नहीं हो जाता , सब व्यर्थ है । ये विकृतियां सदियों से समाज को खोखला करती आ रही है और आज भी साधारण जन - मानस में अपनी जड़ जमाए हुए है ।

इन धार्मिक अंधविश्वासों और रूढ़ियो के विरोध में कितने ही सुधारवादी आंदोलन हो चुके है लेकिन नतीजा जस का तस है। मार्क्सवादी लेखक होने के नाते ईश्वर और धर्म पर इनका विश्वास नहीं है । मार्कण्डेय का दृष्टिकोण आलोचनात्मक है - 'धर्म और ईश्वर के संबंध में । ' धर्म ' इनके लिए जरूरतमदों के नैतिक नियमों के नाम है। जैसे ' पत्थर पर पानी चढ़ाकर अपनी विपत्ति टल जाने की आशा करना । उनकी दृष्टि में धर्म एक ऐसा मारक नशा है। जो जनता को अकर्मण्य बना देता है।

अपनी विभिन्न कहानियों में उन्होंने इसी अंधविश्वास पर आपनी लेखनी चलाई है और इसका पुरजोर विरोध किया है। कहानी 'नीम की टहनी' ग्रामीण जीवन में फैले अंधविश्वास को आधार बनाकर लिखी गई है । इस कहानी में जहाँ एक ओर कुमार

और पियारी के सच्चे प्रेम को दिखाया गया है, वहीं दूसरी ओर अंधविश्वासों में जकड़ी ग्रामीण मानसिकता का भी चित्रण किया गया है।

कहानी ' भूदान ' मे लेखक ने ग्रामीण समाज में व्याप्त अंधविश्वास और अपशकुन की ओर ऊंगली उठाई है। कहानी में अपशकुन के उजागर के तहत लोमड़ी का रास्ता काटना अपशकुन का संकेत है -ग्रामीण समाज में यह अंधविश्वास प्रचलित है। 'मन के मोड़' लेखक की एक दूसरी कहानी है , जिसमे लेखक ने समाज की इन्हीं सब बुराईयों को केंन्द्र में रखा है ।

यह कहानी प्रेमचंद की परम्परा की कहानी है जिसमें एक ग्रामीण परिवार की वास्तविकताओं, इर्ष्या प्रेम आदि के साथ - साथ ग्रामीण जीवन में व्याप्त अंधविश्वासी आस्थाओं का बडा ही स्वाभाविक चित्रण किया है । इसके अतिरिक्त 'शव साधना' 'सहज और शुभ' जैसी अपनी अन्य कहानियों में उन्होंने जहाँ एक और धर्म - गुरुओ, साधुओं आदि की वास्तविकताओं का उद्घाटन किया है वहीं दूसरी ओर धार्मिक कर्म - कांडों के जाल में फंसी आम जन साधारण जनता के विवशता भरे जीवन का भी मार्मिक चित्रण किया है ।

धर्म और ईश्वर के प्रति मनुष्य का विश्वास जब संकीर्ण रूप धारण कर लेता है तब साम्प्रदायिकता की भावना जन्म लेती है और यह देश के विकास में सबसे बड़ी बाधा है क्योंकि इससे आपसी प्रेम और एकता व भाईचारे पर ही सबसे पहला आघात होता है। भारत वर्ष में अनेकों धर्म विद्यमान है जिससे की साम्प्रदायिकता हमारे देश के लिए एक गंभीर समस्या है । मार्कडेय साम्प्रदायिकता की भावना के कटू आलोचक है | देश के बंटवारे को वे मजहब एवं साम्प्रदायिकता का ही परिणाम मानते है। वे जातीय एकता के पक्षधर है ।

२. निष्कर्ष

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि मार्क्सवादी विचारधारा के होने के नाते लेखक का दृष्टिकोण प्रगतिशील और आलोचनात्मक है । इन्होंने धर्म और ईश्वर संबंधी मिथ्या धारणाओं का पोषण करने वाले तथा जनता को धर्मभीरू बनाकर उनका शोषण करने वाले धर्म - गुरुओं, प्रधानों , साधु - महात्माओं आदि पर तिक्षण प्रहार ही नहीं किए है , वरन उनकी साजिशो का परदाफाश भी किया है। मानव - मानव के बीच धर्म व अंधविश्वास के नाम पर साम्प्रदायिकता का जहर फैलाने वालों के लेखक सख्त खिलाफ है । उनकी दृष्टि में जब तक धर्म गुरुओं की स्वार्थपरता मजहब की दीवारों को सहारा दिये रहेंगी तब तक इस समस्या का समाधान कठिन है।

संदर्भ सूची

१. मार्कण्डेय का रचना संसार- डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद
२. साठोत्तरी हिन्दी कहानी साहित्य में चित्रित ग्रामीण समस्याएँ - डॉ. सुरेन्द्र प्रसाद
३. साठोत्तरी हिन्दी कहानी - डॉ. विजय द्विवेदी
४. इकसठ कहानियाँ - डॉ. रामदरश मिश्
५. हिन्दी कहानी का विकास - मधुरेश